भारत स्वातन्त्र्य स्वर्ण-जयन्ती ग्रन्थमाला–46

# प्रमुख उपनिषदों के पारिभाषिक शब्द

## अद्वैतवेदान्त के विशेष सन्दर्भ में

संजय कुमार झा

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

# विषय-सूची


प्राक्कथन iii

दो शब्द v

**प्रथम अध्याय**

1. भूमिका 1

**द्वितीय अध्याय**

2. तत्त्वमीमांसीय पारिभाषिकशब्द 117

**तृतीय अध्याय**

3. ज्ञान मीमांसीय पारिभाषिक शब्द 216

**चतुर्थ अध्याय**

4. आचारमीमांसीय पारिभाषिक शब्द 240

**पंचम अध्याय**

5. प्रकीर्ण पारिमाषिक शब्द 273

**षष्ठ अध्याय**

6. उपसंहार 290

7. सदर्भ-ग्रन्थ 310

द्वितीय अध्याय

# तत्त्वमीमांसीय पारिभाषिक शब्द

शङ्कराचार्य के वेदान्त का मुख तत्त्व अद्वैत है। प्राणिमात्र में जो भिन्न-भिन्न आत्मा प्रतीत होती है, वह एक ही आत्मा है। यह एकात्मा ही शाश्वत सत्य है। अन्य सब मिथ्या है, प्राणियों से भिन्न जो पार्थिव जगत् है, वह भी असत्य है। आत्मा ही सत्य रूप है। सारे मानसिक तथा भौतिक व्यापार क्षणिक हैं। अन्य सारे दर्शन जीवन में वस्तु सत्य का अन्वेषण करते हुए पार्थिव जगत् में हमारे व्यवहार के हेतु प्रामाणिक तथ्य को उपस्थित करते हैं। उसकी दृष्टि वस्तुवादी और संसार की व्यावहारिक मर्यादाओं से सीमित है। परन्तु वेदान्त इस दृश्यमान जगत् को भी कोई महत्त्व न देते हुए इसे माया का कार्य मानकर उस मूल तत्त्व की ओर दृष्टिपात करता है, जिससे यह सारा संसार प्रतिभासित हो रहा है। वेदान्त उस अन्तिम सत्य का अन्वेषण करता है जो इस अनेकविध, सूक्ष्मतम पार्थिव व्यापार के मूल में अवस्थित है। 'छान्दोग्योपनिषद्' में श्वेतकेतु को परमतत्त्व की शिक्षा देते हुए कहा है कि 'हे श्वेतकेतो तत्त्वमसि' तुममें ही वह महान् निहित है। तुम ही वह सत्य हो। तुम ही आत्मा और ब्रह्म हो। 'तत्त्वमसि' वेदान्त का एक प्रसिद्ध सिद्धान्त वाक्य (महावाक्य) बन गया है। अपनी आत्मा के स्वरूप का यह ज्ञान ही सत्यज्ञान है। क्योंकि जैसे ही यह ज्ञान हो जाता है, संसार की माया का स्वयमेव लोप हो जाता है। सत्य के ज्ञान के अभाव में ही मनुष्य इधर-उधर भटकता फिरता है। साथ ही जब तक मन में वासनाओं और तृष्णा का आवेग शान्त नहीं होता, हम इस महान् सत्य को सच्चे अर्थों में ग्रहण नहीं कर पाते। शुद्धचित्त होकर जब आत्मा मोक्ष की इच्छा से इस अन्तिम सत्य को खोजती है तब गुरु शिक्षा देते हैं कि तुम ही वह महान् सत्य हो (तत्त्वमसि)। इस दीक्षा से वह स्वयं उस सत्य के साथ आत्मसात् होकर एकनिष्ठ हो जाता है। सत्-चित्-आनन्दरूप में रमता हुआ निर्धूम प्रकाश के समान जाज्वल्यमान हो उठता है। सारी अविद्या ममत्व आदि का नाश हो जाता है। साधारण संज्ञान मेरा-तेरा आदि का भी कोई

# राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,

**नई दिल्ली-110058**